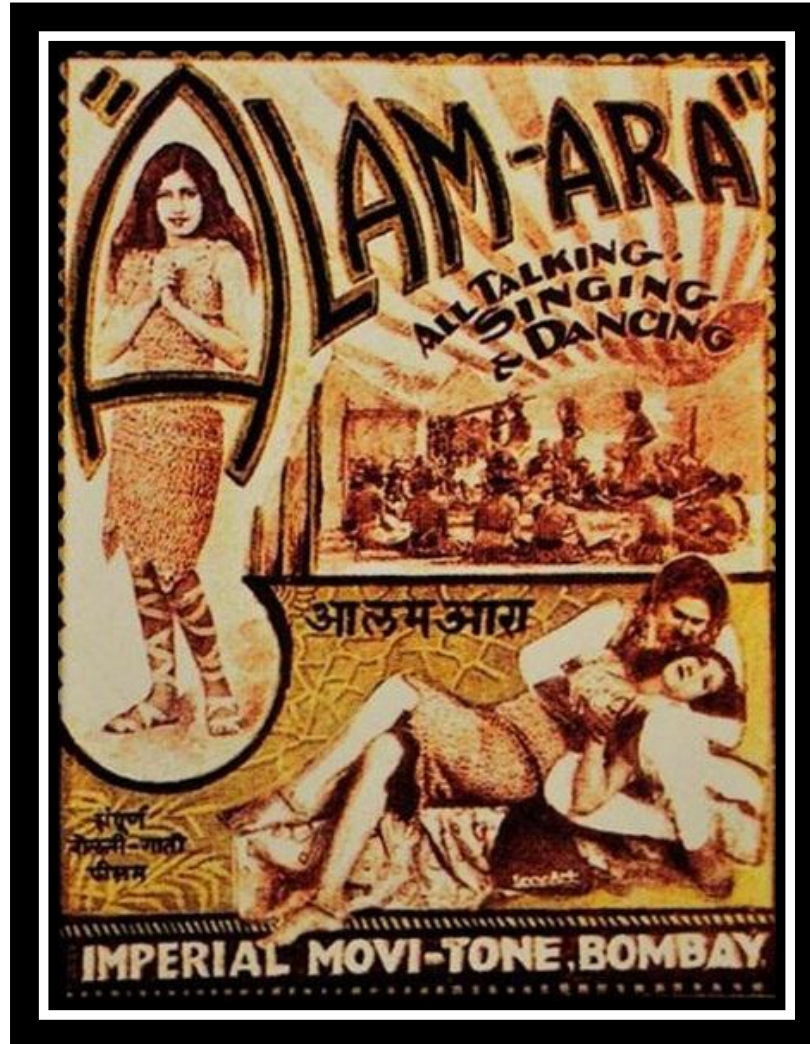


आर्देशिर एम. ईरानी ने भारत की पहली बोलती
फिल्म आलमआरा बनाई ।



फिल्म के नायक विट्ठल और नायिका जुबैदा थीं ।



1956 में इस फिल्म के पच्चीस वर्ष पूर्ण होने पर आर्देशिर को 'भारतीय सवाक् फिल्मों का पिता' की उपाधि दी गई।

यह फिल्म दस हजार फुट लंबी थी, जिसे चार महीनों में तैयार किया गया था।

आलमआरा को 14 मार्च 1931 को बम्बई के मैजिस्टिक सिनेमा में प्रदर्शित किया गया।

इस फिल्म से पहली बार कृत्रिम प्रकाश व्यवस्था, संवाद लेखन, संगीत और गीत लेखन की परंपरा शुरू हुई।

पहली सवाक् फिल्म आलमआरा के निर्देशक आर्देशिर एम. ईरानी ने इसे बनाने की प्रेरणा 'शो बोट' नामक हॉलिवुड फिल्म से ली।

इस फिल्म के नायक विठ्ठल और नायिका जुबैदा थीं। सोहराब मोदी, पृथ्वीराज कपूर, याकूब और जगदीश सेठी ने भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आलमआरा एक राजकुमार और बंजारन लड़की की प्रेम कथा है। यह जोसफ डेविड द्वारा लिखित एक पारसी नाटक पर आधारित है। जोसफ डेविड ने बाद में ईरानी की फिल्म कम्पनी में लेखक का काम किया। फिल्म की कहानी एक काल्पनिक, ऐतिहासिक कुमारपुर नगर के शाही परिवार पर आधारित है। फिल्म में एक राजा और उसकी दो झगड़ालू पत्नियां दिलबहार और नवबहार हैं। दोनों के बीच झगड़ा तब और बढ़ जाता है जब एक फकीर भविष्यवाणी करता है कि राजा के उत्तराधिकारी को नवबहार जन्म देगी। गुस्साई दिलबहार बदला लेने के लिए राज्य के प्रमुख मंत्री आदिल से प्यार की गुहार करती है पर आदिल उसके इस प्रस्ताव को ठुकरा देता है। गुस्से में आकर दिलबहार आदिल को कारागार में डलवा देती है और उसकी बेटी आलमआरा को देशनिकाला दे देती है। आलमआरा को बंजारे पालते हैं। युवा होने पर आलमआरा महल में वापस लौटती है और राजकुमार से प्यार करने लगती है। अंत में दिलबहार को उसके किए की सजा मिलती है, राजकुमार और आलमआरा की शादी होती है और आदिल की रिहाई।

फिल्म और इसका संगीत दोनों को ही व्यापक रूप से सफलता प्राप्त हुई, फिल्म का गीत "दे दे खुदा के नाम पर" जो भारतीय सिनेमा का भी पहला गीत था और इसे अभिनेता *वज़ीर मोहम्मद खान* ने गाया था, जिन्होंने फिल्म में एक फकीर का चरित्र निभाया था, बहुत प्रसिद्ध हुआ। उस समय भारतीय फिल्मों में पार्श्व गायन शुरू नहीं हुआ था, इसलिए इस गीत को हारमोनियम और तबले के संगीत की संगत के साथ सजीव रिकॉर्ड किया गया था।

फिल्म ने भारतीय फिल्मों में फिल्मी संगीत की नींव भी रखी, फिल्म निर्देशक श्याम बेनेगल ने कहा फिल्म की चर्चा करते हुए कहा है, "यह सिर्फ एक सवाक फिल्म नहीं थी बल्कि यह बोलने और गाने वाली फिल्म थी जिसमें बोलना कम और गाना अधिक था। इस फिल्म में कई गीत थे और इसने फिल्मों में गाने के द्वारा कहानी को कहे जाने या बढ़ाये जाने की परम्परा का सूत्रपात किया।"